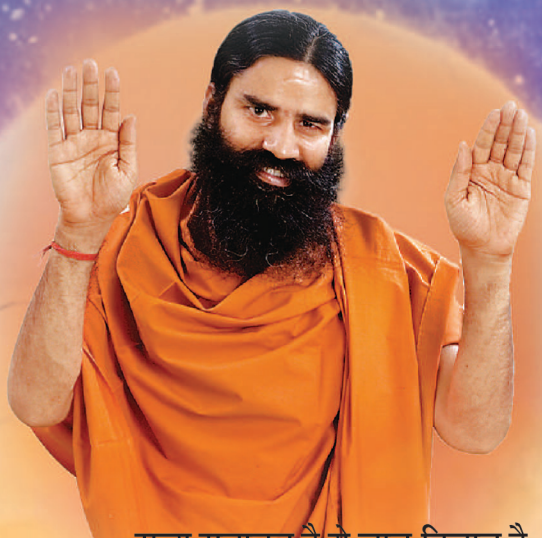

यज्ञ ज्ञान-विज्ञान

स्वामी विप्र देव

सत्य सनातन है ये ज्ञान-विज्ञान है
उदय जागरण है आत्म विश्व कल्याण है
कामधेनु कल्पवृक्ष है, सत्य सदाव्रत महान् है
सेवा परोपकार है, ये प्रकट गुप्तदान है
अग्निहोत्र यज्ञ होम हवन अनुपम वरदान है

पुनीत पावन तप पुण्य
सूक्ष्म वृहद् अति बलवान
मित्र हितैषी सकल गुण निदान
माता-पिता गुरु भगवान्

ऋषियों-मुनियों का अद्भुत ज्ञान
अग्निहोत्र यज्ञ होम हवन अनुपम वरदान
निष्काम, निरवैर, निर्मोह निराभिमान
हित मित चित प्रीत प्रधान

कण-कण, क्षण-क्षण पुण्य प्रदान
बूंद में सागर बीज में वृक्ष सुजान
अग्निहोत्र यज्ञ होम हवन
धर्म कर्म मर्म विधान

विधाता विधि विधान है
दैहिक दैविक भौतिक तापों का
एकमात्र भारत में निदान
संस्कार संस्कृति सन्मति
सोलह संस्कारों का सद्ज्ञान।।

यज्ञ की महिमा तीन लोक गाएँ
नाचें धरा अम्बरा गुगुनाएँ
पुनीत पावन हो दशों दिशाएं
यज्ञ की महिमा देव, सुर, नर गाऐं

यज्ञ, हवन, होम, अग्निहोत्र
महिमा तीनों लोक गाएँ
पुण्यदायी धरा, पुनीत गगन
पावन पवन, प्रभावी दिशाएँ

जय, तप, योग, संयम
ज्ञान, कर्म, भक्ति, श्रद्धा, परोपकर करें, करायें
विभक्ति तन, मन, जीवन
नित्, सत्, चित्त, आदर सबके उर लाएँ
वृक्ष, सरिता, पर्वत, संत कष्ट सहकर परहित निभाएँ

सत्य सनातन देवभूमि, यज्ञ, ज्ञान, विज्ञान से वसुधैव
कुटुम्ब की जोत जलाएँ
आडम्बर, पाखंड, मिथ्या भ्रम से मुक्त हो
सुचि, शील, अस्तेय, अहिंसा का ध्वज फहराएँ